* शिक्षा का आर्थिक विकास (Economic of Education Development) →

किसी भी देश के आर्थिक विकास से तात्पर्य सामान्यतः उसकी आय की उत्तरोत्तर वृद्धि से लिया जाता है और राष्ट्रीय आय सामान्यतः सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) से मापी जाती है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद में मशीन आदि की घिसावट घटाने से विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को ही राष्ट्रीय आय मानते हैं। परन्तु आर्थिक विकास के लिए तो आर्थिक विकास किया नहीं जाता, उससे व्यक्तियों के जीवन स्तर में गुणात्मक वृद्धि होनी चाहिए। जीवन स्तर उठाने से तात्पर्य केवल रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति से नहीं होता और नहीं इसके बाद उच्च स्तर के भोजन, कपड़े और मकान की पूर्ति आदि अन्य संसाधनों के उपलब्ध होने से होता है अपितु इन सबके साथ-2 उपयुक्त शिक्षा, एवं स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध होने, उपयुक्त सुरक्षा सेवा उपलब्ध होने और उपयुक्त यातायात साधन आदि उपलब्ध होने से होती है। इसमें वह सब समाहित होता है जो मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं लाभकर हो।

राष्ट्रीय आय बढ़ने के बाद भी राष्ट्र के नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा न उठे अपितु उसमें गिरावट आये। जब राष्ट्र की जनसंख्या में वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर से अधिक होती है। इसलिए अब राष्ट्र के आर्थिक विकास को राष्ट्रीय आय के स्थान पर राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय के रूप में मापा जाता है। राष्ट्रीय आय को राष्ट्र की कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय प्राप्त होती है। राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने के बाद भी राष्ट्र के नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा न उठे। ऐसा तब होता है जब मुद्रा का अवमूल्यन हो जाता है और महंगाई बढ़ जाती है। अतः यह भी आवश्यक है कि प्रति व्यक्ति आय के साथ-2 मुद्रा के तात्कालिक मूल्य को भी ध्यान में रखा जाय।

परिभाषा → "किसी देश के आर्थिक विकास से तात्पर्य उस देश की प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर होने वाली वृद्धि एवं परिणामस्वरूप उसके नागरिकों के जीवन स्तर के ऊँचा ~~उठने~~ उठने से होता है।"

Scanned with DocScan

* आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका (Role of Education of Economic Development) →

किसी भी अथवा राष्ट्र के आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। शिक्षा द्वारा किसी देश के नागरिकों की क्षमता, योग्यता और निपुणता में जितना अधिक विकास किया जाता है, उन्हें उत्पादन के प्रति जितना अधिक सचेत किया जाता है और उन्हें उत्पादन के क्रय-विक्रय में जितना अधिक निपुण किया जाता है, उस देश का आर्थिक विकास उतनी ही तेजी से होता है। यही कारण है कि वर्तमान में शिक्षा को आर्थिक विकास के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

किसी देश के आर्थिक विकास के लिए किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है। किसी देश के ~~की~~ आर्थिक विकास के लिए विशिष्ट शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी एवं प्रबन्ध शिक्षा की ही आवश्यकता होती है। किसी देश के आर्थिक विकास में इन दोनों प्रकार की शिक्षा की भूमिका होती है।

① आर्थिक विकास में सामान्य शिक्षा की भूमिका → सामान्य शिक्षा का आशय उस शिक्षा से होता है जिसके द्वारा बच्चों को सामान्य जीवन के लिए तैयार किया जाता है। सामान्य शिक्षण का उद्देश्य बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना होता है। इसके साथ ही शासनतन्त्र एवं नागरिकता की शिक्षा भी दी जाती है और देश की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं से परिचित कराया जाता है। इस शिक्षा द्वारा मनुष्य के मानवीय पक्ष का विकास किया जाता है। उसे एक अच्छा मनुष्य बनाया जाता है। इसलिए इसे उदार शिक्षा कहते हैं। सामान्य शिक्षा की व्यवस्था सामान्यतः शिक्षा के सभी स्तरों जैसे- प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च पर की जाती है।

प्राथमिक स्तर पर भाषा ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, समायोजन, गणना और बच्चों के अपने पर्यावरण की सामान्य जानकारी पर विशेष बल रहता है। अनपढ़ व्यक्तियों की अपेक्षा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की उत्पादन क्षमता अधिक

Scanned with DocScan

वे मजदूरों के रूप में अपेक्षाकृत अधिक कुशलता से कार्य करते हैं। इससे उत्पादन बढ़ता है और आर्थिक विकास को गति मिलती है।

माध्यमिक स्तर पर भाषा ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, समायोजन योग्यता के साथ-2 गणित विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषयों का सामान्य ज्ञान कराया जाता है और नागरिकता की शिक्षा भी दी जाती है। इससे बच्चों का दृष्टिकोण विकसित होता है और वे प्रगतिशील बनते हैं। इस स्तर पर अधिकतर बच्चे जीवन जीने की कला भी सीखते हैं। इस स्तर की सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मध्यम वर्ग के कर्मचारी जैसे- स्टोर कीपर, और लिपिक आदि पदों पर सफलतापूर्वक कार्य करते हैं।

उच्च स्तर की सामान्य शिक्षा का उद्देश्य युवकों को साहित्य, धर्म, दर्शन, राजनीति एवं कला आदि के क्षेत्रों में विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना होता है। इस शिक्षा से उनका दृष्टिकोण और अधिक विकसित होता है, वे अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देते हैं और देश की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास करते हैं।

विशिष्ट शिक्षा की भूमिका → विशिष्ट शिक्षा से तात्पर्य सामान्यतः किसी क्षेत्र विशेष में विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना होता है, जैसे- भाषा, साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, तकनीकी एवं प्रबन्ध आदि क्षेत्रों में विशेष ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना। विशिष्ट शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसके द्वारा मनुष्य को अपनी जीविका कमाने योग्य बनाया जाता है। ऐसी शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा कहते हैं। ये मुख्य रूप से तीन होते हैं -

Vocational Education (व्यावसायिक शिक्षा)
- → Professional Education (वृत्ति शिक्षा) एकाउन्टेन्ट, शिक्षक, वकील, डॉक्टर etc
- → Science and Technical Education (वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा) ~~एकाउन्टेंट, शिक्षक~~ वैज्ञानिक, कृषि वैज्ञानिक एवं Er. (इंजिनियर) आदि
- → Management Education (प्रबंध शिक्षा) (उच्च कोटि के प्रशासक)

Scanned with DocScan

हमारे देश में वर्तमान में शिक्षा के विशिष्टीकरण की शुरुआत माध्यमिक स्तर (+2) पर की जा रही है। इसके द्वारा माध्यमिक स्तर के कृषि तकनीशियन, इंजिनियर, और तकनीशियन तैयार किये जा रहे हैं जो उत्पादन के क्षेत्र में कनिष्ट पदों पर कार्य करते हैं। रूस, चीन और जापान में इस स्तर तक आते-2 बच्चे उत्पादन एवं वितरण के क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक कुशल हो जाते हैं और माध्यमिक स्तर की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त कर अपेक्षाकृत अधिक योग्य एवं कुशल इंजिनियर बन जाते हैं।